पौलुस के धर्मविज्ञान का केन्द्र

अध्ययन निर्देशिका

अध्याय तीन

पौलुस और थिस्सलुनीकियों

THIRD MILLENNIUM MINISTRIES

Biblical Education. For the World. For Free.

For videos, manuscripts, and other resources, visit Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

विषय-वस्तु

इस अध्याय को कैसे इस्तेमाल करें और अध्ययन निर्देशिका 4

तैयारी 5

नोट्स 6

I. परिचय (0:25) 6

II. पृष्ठभूमि (2:13) 6

A. दूसरी मिशनरी यात्रा (2:50) 6

B. थिस्सलुनीके में समस्याएं (8:24) 8

1. सताव (9:16) 8

2. झूठे भविष्यवक्ता (11:35) 8

3. मसीही जीवन (17:27) 10

III. संरचना और विषय-वस्तु (22:19) 11

A. 1 थिस्सलुनीकियों (22:48) 11

1. अभिवादन/अंतिम टिप्पणियां (23:33) 11

2. आभार-प्रदर्शन (24:28) 11

3. पौलुस की अनुपस्थिति (27:46) 12

4. निर्देश (29:57) 13

B. 2 थिस्सलुनीकियों (36:42) 14

1. अभिवादन/अंतिम कथन (37:31) 14

2. आभार-प्रदर्शन और उत्साह (38:28) 15

3. निर्देश (39:47) 16

IV. धर्मवैज्ञानिक दृष्टिकोण (42:10) 16

A. उद्धार की धर्मशिक्षा (46:43) 17

1. अतीत का उद्धार (48:30) 17

2. भविष्य का उद्धार (52:13) 18

3. वर्तमान उद्धार (53:37) 19

B. नैतिकता (56:28) 20

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

1. उद्धार की प्रक्रिया (56:55) 20
2. नैतिक आशय (58:33) 20

C. ऐतिहासिक अवस्था (1:02:13) 21

V. उपसंहार (1:11:45) 22

पुनर्समीक्षा के प्रश्न 23

उपयोग के प्रश्न 28

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

इस अध्याय को कैसे इस्तेमाल करें और अध्ययन निर्देशिका

इस अध्ययन निर्देशिका को इसके साथ जुड़े वीडियो अध्याय के साथ इस्तेमाल करने के लिए तैयार किया गया है। यदि आपके पास वीडियो नहीं है तो भी यह अध्याय के ऑडियो और/या लेख रूप के साथ कार्य करेगा। इसके साथ-साथ अध्याय और अध्ययन निर्देशिका की रचना सामूहिक अध्ययन में इस्तेमाल किए जाने के लिए की गई है, परन्तु यदि जरुरत हो तो उनका इस्तेमाल व्यक्तिगत अध्ययन के लिए भी किया जा सकता है।

- **इससे पहले कि आप वीडियो देखें**
    - **तैयारी करें** — किसी भी बताए गए पाठन को पूरा करें।
    - **देखने की समय-सारणी बनाएं** — अध्ययन निर्देशिका के नोट्स के भाग में अध्याय को ऐसे भागों में विभाजित किया गया है जो वीडियो के अनुसार हैं। कोष्ठक में दिए गए समय कोड्स का इस्तेमाल करते हुए निर्धारित करें कि आपको देखने के सत्र को कहाँ शुरू करना है और कहाँ समाप्त। IIIM अध्याय अधिकाधिक रूप में जानकारी से भरे हुए हैं, इसलिए आपको समय-सारणी में अंतराल की आवश्यकता भी होगी। मुख्य विभाजनों पर अंतराल रखे जाने चाहिए।
- **जब आप अध्याय को देख रहे हों**
    - **नोट्स लिखें** — सम्पूर्ण जानकारी में आपके मार्गदर्शन के लिए अध्ययन निर्देशिका के नोट्स के भाग में अध्याय की आधारभूत रूपरेखा रहती है, इसमें हर भाग के आरंभ के समय कोड्स और मुख्य बातें भी रहती हैं। अधिकांश मुख्य विचार पहले ही बता दिए गए हैं, परन्तु इनमें अपने नोट्स अवश्य जोड़ें। आपको इसमें सहायक विवरणों को भी जोड़ना चाहिए जो आपको मुख्य विचारों को याद रखने, उनका वर्णन करने और बचाव करने में सहायता करेंगे।
    - **टिप्पणियों और प्रश्नों को लिखें —** जब आप वीडियो को देखते हैं तो जो आप सीख रहे हैं उसके बारे में आपके पास टिप्पणियां और/या प्रश्न होंगे। अपनी टिप्पणियों और प्रश्नों को लिखने के लिए इस रिक्त स्थान का प्रयोग करें ताकि आप देखने के सत्र के बाद समूह के साथ इन्हें बाँट सकें।
    - **अध्याय के कुछ हिस्सों को रोकें/पुनः चलाएँ** — अतिरिक्त नोट्स को लिखने, मुश्किल भावों की पुनः समीक्षा के लिए या रुचि की बातों की चर्चा करने के लिए वीडियो के कुछ हिस्सों को रोकना और पुनः चलाना सहायक होगा।
- **वीडियो को देखने के बाद**
    - पुनर्समीक्षा के प्रश्नों को पूरा करें — पुनर्समीक्षा के प्रश्न अध्याय की मूलभूत विषय-वस्तु पर निर्भर होते हैं। आप दिए गए स्थान पर पुनर्समीक्षा के प्रश्नों का उत्तर दें। ये प्रश्न सामूहिक रूप में नहीं बल्कि व्यक्तिगत रूप में पूरे किए जाने चाहिए।
    - उपयोग प्रश्नों के उत्तर दें या उन पर चर्चा करें — उपयोग के प्रश्न अध्याय की विषय-वस्तु को मसीही जीवन, धर्मविज्ञान, और सेवकाई से जोड़ने वाले प्रश्न हैं। उपयोग के प्रश्न लिखित सत्रीय कार्यों के रूप में या सामूहिक चर्चा के रूप में उचित हैं। लिखित सत्रीय कार्यों के लिए यह उचित होगा कि उत्तर एक पृष्ठ से अधिक लम्बे न हों।

© 2013 by Third Millennium Ministries
www.thirdmill.org

तैयारी

- पढ़ें प्रेरितों के काम 15:1–18:22
- पढ़ें 1 थिस्सलुनीकियों
- पढ़ें 2 थिस्सलुनीकियों

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

नोट्स

I. परिचय (0:25)

II. पृष्ठभूमि (2:13)

A. दूसरी मिशनरी यात्रा (2:50)

प्रेरितों के काम 15:36-18:22 में वर्णित है कि पौलुस ने वर्तमान यूनान के अनेक क्षेत्रों में जाने से पूर्व प्रमुखत: एशिया माइनर के क्षेत्रों में यात्रा की थी।

पौलुस ने सीलास को अपनी यात्रा के साथी के रूप में चुन लिया, और बरनबास एवं मरकुस साइप्रस की ओर चल पड़े।

- दिरबे
- लुस्त्रा
- फ्रूगिया
- त्रोआस : स्वप्न में पौलुस ने एक व्यक्ति को देखा जिसने उससे मकिदुनिया आने का आग्रह किया। इस स्वप्न के प्रत्युत्तर में पौलुस और उसके साथी तत्काल मकिदुनिया की ओर चल पड़े।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

- फिलिप्पी

- थिस्सलुनीके

- बिरीया : बिरीयावासियों ने पौलुस के सुसमाचार को उत्सुकतापूर्वक ग्रहण किया। परन्तु जल्द ही थिस्सलुनीके के गैरविश्वासी यहूदियों को इस बात का पता चल गया और उन्होंने इस शहर को भी उसके विरुद्ध भड़का दिया।

- ऐथेंस

- कुरिन्थ

- किंख्रिया

- इफिसुस

- अंताकिया

पौलुस ने संभवत: तीमुथियुस के आगमन के ठीक बाद ही इन विषयों को संबोधित करने के लिए 1 थिस्सलुनीकियों की पत्री लिखी होगी। 2 थिस्सलुनीकियों की पत्री भी कुरिन्थ से ही शायद कुछ महिनों के बाद लिखी गई होगी।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

B. थिस्सलुनीके में समस्याएं (8:24)

1. सताव (9:16)

जब पौलुस सर्वप्रथम थिस्सलुनीके में सुसमाचार लेकर आया था तो वहां के विश्वासी हिंसा और जीवन-घातक सताव को सहने के पात्र बन गए थे।

थिस्सलुनीके के गैरविश्वासी इतने उग्र थे कि वे पौलुस और सीलास को अपने नगर से केवल बाहर खदेड़ने में ही संतुष्ट नहीं थे। इसकी अपेक्षा उन्होंने बिरीया और उससे आगे तक मिशनरियों को सताने के लिए उनका पीछा किया।

थिस्सलुनीके में पौलुस द्वारा सबसे पहले प्रचार करने से लेकर उनको पत्रियां लिखने तक थिस्सलुनीके में मसीह के लिए जीने के लिए सताव एक महत्वपूर्ण विशेषता रही थी।

2. झूठे भविष्यवक्ता (11:35)

कष्ट झेलने वाले मसीही अपना पूर्ण जीवन मसीह के द्वितीय आगमन की ओर निर्देशित कर देते हैं।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

जब मसीही मसीह के पुनरागमन के विषय में बहुत अधिक चिंतित होते हैं तो वे झूठे शिक्षकों और झूठे भविष्यवक्ताओं के प्रति संवेदनशील बन जाते हैं जिनके पास मसीह के द्वितीय आगमन के विषय में काफी उग्र दृष्टिकोण होते हैं।

a. पौलुस के साथ संघर्ष

1 और 2 थिस्सलुनीकियों के कई हिस्सों में यह स्पष्ट है कि झूठे शिक्षकों ने पौलुस की शिक्षा का मजबूती से विरोध किया था। झूठे भविष्यवक्ता विश्वासियों की संगति में घुस आए और उन्होंने उसकी कुछ शिक्षाओं के विरोध में काफी कुछ कहा।

वे इतना आगे बढ़ गए होंगे कि वे थिस्सलुनीकियों को अपने विचारों से बहकाने के प्रयास में पौलुस के नाम से झूठी पत्रियां लिखने लगे होंगे।

b. झूठी शिक्षा

झूठे भविष्यवक्ताओं की यह धारणा थी कि यीशु हाल ही में लौट आएंगे। कुछ ने यहां तक घोषित कर दिया था कि मसीह पहले ही लौट चुका है।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

3. मसीही जीवन (17:27)

a. निराशा

थिस्सलुनिकी निराश हो गए थे क्योंकि यीशु पुन: प्रकट नहीं हुआ था।

पौलुस ने थिस्सलुनीकियों को आश्वस्त किया कि यद्यपि मृत विश्वासी शारीरिक रूप से मर गए हों, वे फिर भी मसीह के साथ जीवित हैं, और जब मसीह लौटेगा तो वे उसके साथ पुन: लौटेंगे।

b. गैरजिम्मेदारी

झूठे भविष्यवक्ताओं के संदेश ने गैरजिम्मेदारीपूर्ण जीवन बिताने की ओर भी अग्रसर किया था।

झूठे भविष्यवक्ताओं ने वहां के कुछ मसीहियों को भरोसा दिलवा दिया था कि उन्हें अब अपने लिए काम करने की आवश्यकता नहीं है।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

III. संरचना और विषय-वस्तु (22:19)

A. 1 थिस्सलुनीकियों (22:48)

1. अभिवादन/अंतिम टिप्पणियां (23:33)

अभिवादन दर्शाता है कि यह पत्री थिस्सलुनीकियों को संबोधित की गई है और यह पौलुस की ओर से है। यह सीलास और तीमुथियुस को सहलेखकों के रूप में संबोधित करती है।

2. आभार-प्रदर्शन (24:28)

पौलुस ने कष्टों के बीच थिस्सलुनीकियों की सहनशक्ति के लिए परमेश्वर के प्रति आभार व्यक्त किया।

पौलुस ने उन्हें बताया कि वह कितना प्रसन्न है कि उन्होंने उसे अपनी आंखों से देखा है।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

पौलुस ने धन्यवाद दिया कि थिस्सलुनीकियों ने उसके अधिकार को पहचान लिया था।

3. पौलुस की अनुपस्थिति (27:46)

पौलुस ने थिस्सलुनीकियों को अपनी निरन्तर देखभाल का आश्वासन दिया। और उसने तीमुथियुस को उनके पास भेजकर अपनी इस देखभाल को प्रदर्शित किया।

पौलुस ने तीमुथियुस द्वारा थिस्सलुनीके से लाए गए समाचार पर अपने कृतज्ञता से परिपूर्ण आनन्द को व्यक्त किया : विश्वासी अपने विश्वास में दृढ़ खड़े थे और वे पौलुस को उतना ही याद कर रहे थे जितना प्रेरित स्वयं उन्हें कर रहा था।

पौलुस ने प्रार्थना करते हुए पिता से मांगा कि वह उसकी “अगुवाई करे” ताकि वह उनसे पुन: भेंट कर सके।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

4. निर्देश (29:57)

पौलुस ने उसकी पहले की आज्ञाएं मानने के लिए थिस्सलुनीकियों की सराहना की।

पौलुस ने बहुत से विशेष विषयों का उल्लेख किया जिनमें उसे आशा थी कि थिस्सलुनीके के मसीही पाप के विरुद्ध अपनी सुरक्षा करें और मसीह में आज्ञाकारिता को बढ़ाएं।

पौलुस ने थिस्सलुनीकियों को अर्थपूर्ण परिश्रम और प्रतिदिन के कार्य में लगे रहने की आज्ञा दी।

पौलुस ने थिस्सलुनीकियों को सिखाया कि वे अपने उन प्रिय जनों के साथ जो मसीह में सो चुके थे, भविष्य में पुन: मिलने की आशा के साथ उत्साहित करें।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

पौलुस यह स्पष्ट करना चाहता था कि मसीह का पुनरागमन सभी विश्वासियों को पवित्र जीवन जीने के लिए उत्साहित करना चाहिए।

शेष पदों में पौलुस ने कई विषयों को संबोधित किया :

- जो आलसी थे उन्हें प्यार से पालने की अपेक्षा उन्हें चिताओ। (5:14)
- हानि के बदले भलाई करो। (5:15)
- मुश्किलों के बीच आनंदित रहना (5:16-18)
- भविष्यवाणियों और शिक्षाओं को परखना। (5:19-22)

B. 2 थिस्सलुनीकियों (36:42)

1. अभिवादन/अंतिम कथन (37:31)

अभिवादन संक्षिप्त है और सीधा है और यह दर्शाता है कि पत्री थिस्सलुनीके की कलीसिया को लिखी गई थी। पत्री केवल पौलुस की ओर से ही नहीं बल्कि सीलास और तीमुथियुस की ओर से भी है।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

जब हम इस पत्री के अंतिम कथनों की संक्षिप्तता को देखते हैं तो यह स्पष्ट हो जाता है कि पौलुस ही मुख्य लेखक है। पौलुस ने केवल इसे जालसाजी के विरुद्ध अधिकारिक बनाने के लिए इस पत्री पर हस्ताक्षर किए।

2. आभार-प्रदर्शन और उत्साह (38:28)

पौलुस ने थिस्सलुनीकियों के विश्वास और प्रेम के लिए, विशेषकर सताव के बीच, उनके प्रति आभार प्रदर्शित किया।

पौलुस ने उन्हें फिर से यह बताने के द्वारा उत्साहित किया कि उनका विश्वास कितना उदाहरणीय था, और किस प्रकार उसने दूसरी कलीसियाओं के समक्ष उनके धैर्य की प्रशंसा की थी।

पौलुस ने स्पष्ट किया कि उसने निरन्तर थिस्सलुनीकियों के लिए प्रार्थना की और कि वे अपने संघर्षों में अकेले नहीं थे।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

3. निर्देश (39:47)

पौलुस के निर्देश तीन भागों में बांटे जा सकते हैं :

- पौलुस ने मसीह के आगमन के विषय में उन्हें निर्देश दिया। (2:1-17)
- पौलुस ने थिस्सलुनीकियों से सेवकाई में अपनी और अपने सहकर्मियों की सुरक्षा और सफलता के लिए प्रार्थना करने की विनती की। (3:1-5)
- पौलुस ने गैरजिम्मेदारी के विरुद्ध चेतावनी दी। (3:6-15)

IV. धर्मवैज्ञानिक दृष्टिकोण (42:10)

पौलुस की युगांतविद्या परमेश्वर द्वारा तैयार किए गए इतिहास के प्रारूप के आधार पर पुराने नियम के आम दृष्टिकोणों से निकली।

पौलुस और अन्य प्रेरितों ने इतिहास के सरल द्वियुगी प्रारूप में थोड़ा परिवर्तन किया।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

थिस्सलुनीकियों ने एक ऐसा दृष्टिकोण विकसित कर लिया था जिसे हम “अतिउग्र युगांतविद्या” कह सकते हैं। अनेक लोगों ने विश्वास कर लिया था कि आने वाले युग की समाप्ति पहले से ही हो चुकी है या कि फिर होने ही वाली है।

पौलुस ने अंत समय के विषय में उनके दृष्टिकोण को संतुलित करने के प्रयास के द्वारा थिस्सलुनीकियों की समस्या के प्रति प्रत्युत्तर दिया।

A. उद्धार की धर्मशिक्षा (46:43)

पौलुस ने दर्शाया कि वह उद्धार जो मसीह के पुनरागमन पर लागू होगा, वह उस उद्धार पर निर्भर करता है जो पहले से ही दिया जा चुका है।

1. अतीत का उद्धार (48:30)

पौलुस ने कहा कि परमेश्वर ने थिस्सलुनीकियों को “चुन लिया” है, अर्थात् पौलुस द्वारा सुसमाचार के प्रचार के माध्यम से विश्वास करने से भी पूर्व परमेश्वर ने पहले से ही निश्चय कर लिया था कि उसने थिस्सलुनीकियों से प्रेम किया है और वह उन्हें उद्धार प्रदान करने जा रहा है।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

जब पौलुस ने थिस्सलुनीकियों को उनके चुनाव के विषय में स्मरण दिलाया, तो उसके मन था कि परमेश्वर ने उन्हें यीशु के साथ जोड़ने और इस युग से उस आने वाले युग में स्थनांतरण होने के लिए चुना था।

पौलुस ने थिस्सलुनीकियों के उद्धार के अन्य पहलू के विषय में भी लिखा जो अतीत में घटित हो चुका था, अर्थात् उनका हृदयपरिवर्तन।

2. भविष्य का उद्धार (52:13)

अपनी पत्री में उद्धार की ओर ध्यान आकर्षित करने का पौलुस का दूसरा तरीका उनके उद्धार के भविष्य के पहलुओं पर ध्यान देना था।

पौलुस ने माना कि मसीह का भावी आगमन उद्धार की पूर्णता को लाएगा।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

भविष्य में जब हम नए स्वर्ग और नई पृथ्वी पर मसीह के साथ राज्य करेंगे तो हम अकल्पनीय सम्मान और महिमा की दशा में एक मूलभूत और पूर्ण परिवर्तन का अनुभव करेंगे।

3. वर्तमान उद्धार (53:37)

पौलुस ने उद्धार को वर्तमान वास्तविकता के रूप में भी दर्शाया।

पौलुस ने इस हैरत भरी सच्चाई की ओर उनका ध्यान आकर्षित किया कि वे पहले से ही मीरास के एक भाग का अनुभव कर रहे हैं जिसकी प्रतीक्षा वे उत्सुकता से कर रहे थे।

आत्मा की सेवकाई उस समय के दौरान बहुत ही महत्वपूर्ण होती है जब यह युग और आने वाला युग एक दूसरे से मिलते हैं।

सत्य में निरन्तर विश्वास उनके जीवनों में मसीह के वर्तमान उद्धार के कार्य का एक मूलभूत पहलू था।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

B. नैतिकता (56:28)

पौलुस ने थिस्सलुनीके की अतिउग्र युगांविद्या का विरोध नैतिक मसीही जीवन पर बल देने के द्वारा किया।

1. उद्धार की प्रक्रिया (56:55)

परमेश्वर ने उद्धार के भावी चरण की ओर हमारी अगुवाई करने के लिए हमारे उद्धार के अतीत के और वर्तमान अनुभवों को तैयार किया है। और अतीत एवं वर्तमान के चरणों के बिना, भावी उद्धार तक पहुंचा नहीं जा सकता।

2. नैतिक आशय (58:33)

उसने लिखा कि नामधारी मसीही जो धार्मिक रूप से जीवनयापन नहीं करते वे इस प्रक्रिया को पूर्ण नहीं कर सकते क्योंकि उन्होंने इसे वास्तव में कभी आरंभ ही नहीं किया है।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

पौलुस यह नहीं मानता था कि मसीह में सच्चे विश्वासियों के लिए अपने उद्धार को खो देना संभव है।

क्योंकि उन्होंने पूर्व में उद्धार का अनुभव कर लिया था, इसलिए पौलुस ने बल दिया कि वर्तमान में उनका उद्धार में निरंतर बने रहना उनकी जिम्मेदारी है। मसीहियों को इसलिए जागते और सावधान, विश्वास, आशा और प्रेम में दृढ़ रहना है क्योंकि हमारा भावी उद्धार इसी पर निर्भर रहता है। हमारी वर्तमान विश्वासयोग्यता भावी उद्धार को प्राप्त करने का माध्यम है।

C. ऐतिहासिक अवस्था (1:02:13)

पौलुस ने थिस्सलुनीकियों को याद दिलाया कि मसीह के पुनरागमन से पूर्व काफी घटनाएं होनी हैं और इन घटनाओं का होना अभी बाकी है।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

मसीह के पुनरागमन से पूर्व चार बातें होनी थीं :

1. अधर्म के भेद का क्रियान्वयन और उसका रोका जाना

2. जानाविद्रोह या अधर्म का घटित होना

3. रोकने वाले को दूर किया जाना

4. अधर्म के पुरुष का प्रकट होना

अधर्म के पुरुष की पहचान के विषय में अनेक सुझाव दिए गए हैं।

V. उपसंहार (1:11:45)

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

पुनर्समीक्षा के प्रश्न

1. अपनी दूसरी मिशनरी यात्रा के दौरान पौलुस कहाँ-कहाँ गया और उसकी यात्रा का उद्देश्य क्या था?

2. थिस्सलुनीकियों की तीन मुख्य समस्याएँ कौनसी थीं, और उनके समाधान क्या थे?

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

3. किस प्रकार पौलुस की दूसरी मिशनरी यात्रा और थिस्सलुनीकियों की समस्याएँ पौलुस की लिखने में प्रेरणा को समझने में सहायता करती हैं?

4. थिस्सलुनीकियों की पहली पत्री को लिखने में पौलुस के उद्देश्य और उन बिन्दुओं को स्पष्ट कीजिए जो वह उन्हें बताना चाहता था।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

5. थिस्सलुनीकियों की दूसरी पत्री को लिखने में पौलुस के उद्देश्य और उन बिन्दुओं को स्पष्ट कीजिए जो वह उन्हें बताना चाहता था।

6. 1 और 2 थिस्सलुनीकियों के उद्देश्यों की तुलना कीजिए। वे कैसे एकसमान हैं और कैसे भिन्न हैं?

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

7. उद्धार की पौलुस की धर्मशिक्षा किस प्रकार थिस्सलुनीकियों के अतिउग्र युगान्त-विज्ञान को संबोधित करती है?

8. किस प्रकार नैतिक मसीही जीवन पर पौलुस का बल थिस्सलुनीकियों के भावी उद्धार से संबंधित है?

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

9. मसीह के पुनरागमन से पहले होने वाली घटनाओं के आधार पर थिस्सलुनीकियों की ऐतिहासिक स्थिति का वर्णन कीजिए।

10. स्पष्ट कीजिए कि किस प्रकार पौलुस के युगान्त-विज्ञान ने उसके धर्मविज्ञानी दृष्टिकोणों को आकार दिया।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

उपयोग के प्रश्न

1. स्पष्ट कीजिए कि किस प्रकार पौलुस की आरंभिक योजनाएं और अभिलाषाएं मकिदुनिया जाने की परमेश्वर की बुलाहट के प्रकाश में पूरी नहीं हुईं। पौलुस ने कैसे प्रत्युत्तर दिया? हमें किस प्रकार प्रत्युत्तर देना चाहिए जब परमेश्वर हमें उन कार्यों को करने के लिए कहता है जिसकी हमें योजना नहीं बनाई है?

2. कष्ट और सताव झेलने वाले थिस्सलुनीकियों के विश्वासी कठिनाई के मध्य कैसे आनंदित और विश्वासयोग्य रह सके?

3. पहले से-अभी नहीं के ऐतिहासिक परिदृश्य में विश्वासियों द्वारा पवित्र जीवन जीना क्यों महत्वपूर्ण है?

4. आपके अनुसार पौलुस और अन्य लोग प्रतिदिन प्रार्थना क्यों करते थे? कलीसिया को प्रतिदिन प्रार्थना की क्यों आवश्यकता है?

5. हमारा उद्धार किस प्रकार पहले ही और अभी नहीं के पहलुओं को दर्शाता है?

6. पौलुस ने अधर्म के भेद को कैसे स्पष्ट किया? किस प्रकार पौलुस का स्पष्टीकरण आपको हमारे आज के संसार के विषय में दृष्टिकोण प्रदान करता है?

7. इस अध्ययन से आपने कौनसी सबसे महत्वपूर्ण बात सीखी है? क्यों?

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org